ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 420-423

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

इंसानियत के दायरे से बाहर होता आदमी

प्रियेश कुमार तिवारी Email : aaryvart2013@gmail.com

Received- 23.11.2020, Revised- 04.12.2020, Accepted - 07.12.2020

सारांश– ***मन्नू भंडारी अपने समय की वरिष्ठतम लेखिका हैं. उन्होंने कहानी, उपन्यास और नाटक जैसी तमाम साहित्य विधाओं के साथ साहित्य के अतिरिक्त दूसरे कला माध्यमो जैसे सिनेमा और टेलीविजन के लिए भी खूब काम किया है। नई कहानी आन्दोलन की प्रमुख हस्ताक्षर रहीं मन्नू जी दृश्य–श्रव्य माध्यम लेखन में बहुत सफल रहीं, प्रयोगधर्मिता और प्रयोजनियता लेखक की थाती होती है। मन्नू जी का लेखकीय व्यक्तित्व इन दोनों गुणों का साकार रूप है। एक 'इंच मुस्कान' जैसे उपन्यास में उनके सह–लेखक राजेन्द्र यादव थे. विवाह विच्छेद की त्रासदी में पिस रहे एक बच्चे को केंद्र में रखकर लिखा गया उपन्यास 'आपका बंटी' आज एक मुहावरा बन चूका है। 'महाभोज' जैसे उपन्यास में भ्रष्टाचार में लिप्त अफसरशाही के बीच आम आदमी की पीड़ा और दर्द और दलित समुदाय के शोषण को जिस कौशल में बुना गया है वह दुर्बल है। इस रचना में व्यंग और यथार्थ जिस कौशल में पिरोया गया है, उसका उदहारण हिंदी साहित्य में बहुत कम बार देखने को मिलता है।***

कुंजीभूत शब्द– उपन्यास, नाटक, साहित्य विधाओं, टेलीविजन, आन्दोलन, हस्ताक्षर।

शोध अध्येता– हिन्दी विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्व विद्यालय , रीवा, (म0प्र0) भारत

अनुरूपी लेखक

हिंदी की नई कहानी आन्दोलन सर्जनात्मक आंच का आन्दोलन रहा है। नई कहानी आन्दोलन के समय में मन्नू जी ने जो लिखा उन सब में पितृसत्ता का विद्रोह और नारीवाद का पक्ष मौजूद है. दरअसल, उनका लेखन वंचितों और शोषितों के पक्ष का लेखन है जो उनकी ताजी कहानी 'भोपाल को किसने मारा' में भी पूरी ठसक के साथ मौजूद है। इस कहानी के केंद्र में शहर की ओर धकेले जाते गांव की दशा–दिशा और युवा मन का मनोविज्ञान है।

'गोपाल को किसने मारा' कहानी की शुरूआती पंक्तिया विकास के बुलडोजर के पहियों तले रौदे जाने की गवाही देती हैं। फिल्म के प्रथम दृश्य की तरह कहानी की पहली पंक्ति भी महत्वपूर्ण हुआ करती है। कहानी की पहली पंक्ति से ही मन्नू जी कहानी के नब्ज पर हाथ रख देती हैं। पहली पंक्ति में बदलाव की ओर बढ़ रहे गांव का वर्णन है– "बेहद खरामा–खरामा चाल से चलते हुए इस गांव ने भी आखिर कस्बे की दहलीज पर पांव रख ही दिए।"

हम जानते हैं की हर पंक्ति या दृश्य अपने में आख्यान या वृतांत हुआ करते हैं। कहानी की पहली पंक्ति भी कस्बे बने गांव की करुण आख्यान की ओर इशारा करती है। चतुर कथाकार, चतुर कलाकार–मूर्तिकार की तरह एक–एक रंग और टॉकी–छैनी का सोच समझकर उपयोग करता है। मूर्तिकार के हर प्रहार में उसकी करुणा और मूर्ति के आकार के प्रति चिंता समाई हुई होती है। मूर्तिकार की यह सजगता कथाकार के द्वारा उपयोग में आए शब्दों के चयन में दिखाई पड़ती है। पहली पंक्ति पूरी कहानी की बीच पंक्ति है। पूरी कहानी इसी एक पंक्ति का विस्तार है। इतनी वरिष्ठ और उम्र के इस पड़ाव पर भी मन्नू जी पूरी सचेतना के साथ कथा का निर्वहन करती है।

हम सब जानते हैं कि बाजार और उपभोक्तावाद ने पैसो की अहमियत भले बढ़ा दिया हो मगर रिश्तों की गर्माहट को पूरी तरह से सोख लिया है। बाजार ओर रुपयों की ताकत ने मानवीय संबंधो को दूभर और मृतप्रायः कर दिया है। मैदानी क्षेत्रों में पांव पसारते बाजार के नूर ने हर घर को बेनूर–सा कर दिया है. यह कहानी ऐसे ही बेनूर होते एक गावं की कहानी हैं।

मन्नू जी की यह कहानी गावं और शहर के मुहाने पर खड़े दो पीढियों की टकराहट की कहानी हैं। मेमनों की तरह गावं के गावं अजगर रूपी शहर के पेट में समाते जा रहे हैं। जिस तरह अजगर द्वारा निगलते समय मेमने प्राण की भीख मांगते हैं, उसी तरह अजगर रूपी शहर के फेटे में फंसे गावं भी छटपटा रहे हैं। रामसिझावन की छटपटाहट हलाल होते गावं की छटपटाहट है. इस महादेश के तमाम गावों के दलित–आदिवासी गावं विकाश(विनाश) के चंगुल में फंसकर इसी तरह छटपटा रहे हैं। आदिवासी इलाको में तो गावं को गावं बनाए–बचाए रखने के लिए आंदोलन तक चल रहे हैं देखने में आया हैं कि सैकड़ो गावं अंतिम साँस तक बचने की पूरी कोशिश कर रहे हैं, जैसे सांप के जबड़ो में फंसा मेढ़क!

कहानी 'गोपाल को किसने मारा' में एक जिंदा आदमी मृत रूप में संबोधित है, तो सिर्फ इसलिए कि उसके अंदर की मनुष्यता मर चुकी है. कहानी के आंतरिक लय में यह सवाल पंक्ति दर पंक्ति गूंजती रहती है कि आखिर वह कौन– सी परिस्थितिया हैं जो जिंदा

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

आदमी की जिंदादिली छिनकर उसे मुर्दा बनाती जा रही हैं। इस कहानी में गोपाल का पिता रामसिझावन कलपते गावं का प्रतीक है और गोपाल जिंदा रहने की जिद्द पर अमादा एक ऐसे युवा का प्रतीक है, जिसे किसी भी प्रकार की स्मृतियों से कोई सरोकार नहीं. कहानी में यह सवाल भी अपनी जगह कायम है कि क्यां स्मृति शून्य होकर जिया जा सकता है? साथ यह भी कि क्या विकास का पूरा इलाका स्मृतियों के इलाके के मलबे पर ही खड़ा होगा?

इस तरह की स्मृति शून्यता से किसी बड़ी साजिश की बू आती है इसीलिए 'गोपाल को किसने मारा' कहानी दो पीढ़ियों की टकराहट के बावजूद उन्माद नही बल्कि करुणा पैदा करती है. कहानी का प्रधान रस करुणा ही है अपने अनुभव से हम सभी जानते है कि विकासरुपी अजगर गावं की जमीन ही नहीं वहां की मनुष्यता तक को लील रहा है. जिस तरह अजगर के पेट में जाने के बाद शिकार का दम घुटने लगता है, उसका जिस्म टुकड़े–टुकड़े होने लगता है, उसी तरह शहर असंख्य लोगों को बर्बाद करके कुछ लोगों को आबाद करने में लगे हैं। यही कारण है की चंद लोगों द्वारा शहर विकास के मानक माने जाते हैं। बहुसंख्यक आबादी को हाशिए पर डाल देने से शहर डरावने लगने लगे हैं। शहरीकरण द्वारा बने बेडौल नक्शे और फूहड़ जिस्म वाले शहरों के हाथ किसानों की जमींन और उनके अरमानो के खून से रंगे हुए हैं। विकास का मतलब मनुष्य की गरिमा संरक्षण न होकर पूंजी का निर्माण हो गया है मन्नू जी की यह कहानी घटते गावं और बढ़ते शहरों के बीच फंसे इंसान की त्रासदी सामने लाती है।

भारत खेती–किसानी का देश है. इस महादेश के सामाजिक–सांस्कृतिक–आर्थिक संबंधो का निर्माण और निर्वहन खेती–किसानी से होता आया है देश के मैदानी हिस्से, जहां सदानीरा नदियां प्रवाहित होती हैं, वहां के त्यौहार, गीत और किस्से भी पानीदार हुआ करते हैं खेती के कारण ही ग्राम–गीतों और किस्सों–कहानियों से खलिहान आबाद रहा करते है इतना ही नहीं खेती–किसानी ने स्वदेशी आन्दोलनों को ताकतवर बनाकर ब्रिटिश सरकार को बाहर निकालने में भी मदद की। चम्पारण सत्याग्रह में भाग लेने से गाँधी का मान पूरे देश में बढ़ा। जिस तरह से इस आंदोलन से अखिल भारतीय स्तर पर गाँधी की स्वीकार्यता कायम हुई, उसी तरह इस आंदोलन के कुछ महीने पहले सरदार पटेल के नेतृत्व में गुजरात के खेड़ा और बरदोली में किसानों का भी सत्याग्रह आंदोलन हुआ। इसी आंदोलन के दौरान वल्लभभाई पटेल को 'सरदार' की उपाधि प्राप्त हुई। यही कारण है कि इसे प्रथम असहयोग आंदोलन भी कहा जाता है। किसान आंदोलनों के इतिहास और उसके प्रभाव पर नजर रखने वाले इतिहासकार मानते हैं कि किसानों ने गाँधी और इंकलाबियों, दोनों का साथ दिया। उन्होंने गांधी और भगत सिंह, दोनों को चाहा और दोनों के लिए कुर्बानियां दीं। भगत सिंह के चाचा अजीत सिंह ने जमीन हथियाने पर आमादा अंग्रेजों के खिलाफ 'पगड़ी संभाल जट्टा' जैसा सशक्त किसान आंदोलन छेड़ा था। जिसकी आंच से अंग्रेजी सरकार कांप गई और मजबूर भूमि सुधार कानून को पास करना पड़ा।

मन्नू जी की इस कहानी में भुमियुक्त से भूमिहीन होते किसान और भविष्यहींन होती मनुष्यता के प्रश्न, केंद्रीय प्रश्न हैं। यद्यपि कहीं संकेत नहीं है लेकिन किरदारों के नाम और माली हालात के आधार पर यह कहानी भारतीय समाज व्यवस्था के अंतिम पायदान पर खड़ी पिछड़ी जमात की कहानी है। बाप और बेटे के बीच का मन–मुटाव है, दरअसल दो पीढ़ियों के मानवीय धरातल का टकराव तो है ही। साथ ही साथ दो संस्कृतियों की भी टकराहट है। गांव और शहर की यह टकराहट होली और गोबर के बीच भी दिखाई पड़ती है। चूंकि बेटा अपने बड़े भाई गोविंद की स्मृति में बने प्याऊ को उजाड़कर वहां एक दुकान खड़ी करना चाहता है। इसलिए कहानी में प्याऊ को भी केंद्रीय महत्त्व प्राप्त है। पूरी कहानी यही सिमटी हुई है और यही खुलती भी है। हालांकि प्याऊ के साथ–साथ बेरोजगारी और बेरोजगारी का साइड इफेक्ट गराबी भी इस कहानी की मूलात्मा को खाद–पानी देती है। कहानी को पढ़ते हुए स्पष्ट होता है कि गोपाल को अमानुष होने की नकारात्मक उर्जा महंगी होती शिक्षा और बेरोजगारी से हासिल होती है। गोपाल अपने बड़े भाई गोविंद की स्मृति में बने प्याऊ, जिसका सामुदायिक महत्व है, को उजाड़कर उसका इस्तेमाल व्यक्तिगत हित में करना चाहता है। कथा का प्लाट आत्मकेंद्रित होती दुनिया की एक आम परिघटना से उठाया गया है। भारत का मध्यवर्ग अब इस तरह की घटनाओं से अछूता और अप्रभावित होकर जीने का हुनर हासिल कर चुका है। हमारे आस–पास घट रही इस तरह की आम घटनाओं पर अब हमारी नजर नहीं ठहरती। हमें सर्दी में सड़क पर सोते किसानों का दुख दिखना बंद हो चुका है। सीवर में प्राण गंवाते सफाईकर्मी और खेत–खलिहान, जंगल–पहाड़ के लिए लड़ते आदिवासियों की लड़ाई हमारी आंखों की परिधि में नहीं आती। संवेदनात्मक रूप से ठूठ होते हम लोगों को इस तरह आम घटनाएं इसलिए दिखाई नहीं देती क्योकिं इनसे हमारे आनंद की तीव्रता बाधित होती है। मध्यवर्ग अब इतना हुनमरंद हो चुका है कि उसे हजारों रामसिझावनों की चीत्कार और गोविंदो की लाशें दिखाई नहीं पड़तीं। यही कारण है कि इस देश में किसानो

PIF-7.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

की लाशों की घटनाएं चाहे अखबार में जगह पाएं न पाएं लेकिन पटाखों के बाजार की खबरें जगह जरूर पाती हैं।

इसलिए संवेदनात्मक रूप से बंजर होते समाज के लिए इस कहानी का पाठ होना आवश्यक है क्योंकि बहुत ही खामोशी से यह कहानी सामुदायिक क्षरण की परिस्थितियों का प्रकाशन करती है इस अर्थ में यह कहानी गरीबी और लाचारी के समाजशास्त्रीय अध्ययन के लिए जरूरी किरदार और असबाब मुहैया कराती है। साथ–साथ ही असहाय होते लोकतंत्र के लिए आवाज बनती नजर आती है प्याऊ का नष्ट होना लोक कल्याण की सुविधाओं का नष्ट होना है। गरीब होते इस महादेश में प्याऊ उजाड़े नहीं बल्कि बनाए जाने चाहिए।

कहानी का ताना–बाना प्याऊ के इर्द–गिर्द बुना गया है। 'गोपाल को किसने मारा' कहानी रामसिझावन के बेटों के बिखरने की कथा है। उसके दोनों बेटे शहर की भेंट चढ़ गए हैं। बड़ा बेटा गोविंदा अपने मामा महेश के साथ शहर में जाकर बिजली विभाग में अस्थायी आधार पर काम कर रहा था, जहां एक हादसे में उसकी मृत्य हो गई। मृत्यु के बाद मुआवजे से प्राप्त धन को रामसिझावन का जमीर स्वीकार नहीं करता है। महेश और सरपंच के सुझाव पर गोविंदा के नाम पर शहर में एक प्याऊ बनवाने की बात पर रजामंदी बनती है। प्याऊ बनने के बीस–पच्चीस सालों में शहर धीरे–धीरे गांव में धंसने लगा है और रामसिझावन के छोटे बेटे गोपाल के नवजवान होते–होते गांव केमानवीय मूल्य काफी बदल चुके होते हैं। गोपाल का मस्तिष्क गांव और शहर के द्वंद्व से बुना हुआ मस्तिष्क है, जबकि रामसिझावन की पूरी उम्र खेती–किसानी में बीत गई है।

वह आम किसान की तरह जमीन से प्यार करने वाला सीमांत किसान है। वह अब भी चाहता है कि गोपाल उसी की तरह खेती करके परिवार का पेट भरे, मगर गोपाल चौखट के बाहर खड़े बाजार की आरती करने के लिए लालायित है। लालसाओं–कामनाओं और आम बुराइयों का संक्रमण अक्सर बड़े घरानों से होते हुए छोटे घरों तक पहुंचता है. कहानी की शुरुआत में इस दिशा में संकेत है– "गांव में तो चाहे युवा हों या बुजुर्ग, सबकी नजरें और पांव गांव की जमीन में ही गड़े रहते थे... पर कस्बों की हवा लगते ही युवा वर्ग के पांव वहां से उखड़ने के लिए छटपटाने लगे और ललचाई नजरें शहर पर जाकर टिक गईं, पर दो–चार रईस परिवारों के बच्चे जरुर लोट–पोट कर जैसे–तैसे शहर पहुंच गए...रईसों के ये बच्चे जब कभी गांव का चक्कर लगाते तो जरुर अपने साथ थोड़ा–सा शहर भी बांध ही लाते और उन्हीं के बलबूते पर गांव में अपने को किसी बादशाह से कम न समझते। उनका रहन–सहन बोल–चाल देख–सुनकर गांव के युवाओं के मन में भी न जाने कितने सपने कुलबुलाने लगते।" गोपाल की आंखों में केवल सपने ही नहीं मन में कुछ बुनयादी सवाल भी हैं। जमीन के उपज की मामूली कीमत से वह निराश है। वह अपने पिता को डपटते हुए कहता है– "क्या रखा है इस पुश्तैनी धंधे में. हाड़–तोड़ मेहनत करो तो दो जून की रोटी मिल जाए बस। जिस साल आसमान में पानी न बरसे तो बैठे–बैठे आंखों में पानी बहाते रहो. कोई धंधा है साला यह भी?"

गोपाल के इस तर्क का कोई जवाब न रामसिझावन के पास है, न इस महादेश को चलाने वाले व्यवस्था के पास। यहां गोपाल का मनोविज्ञान जमीन बेचकर शहर में समाने वाले निराश और हिंसक भीड़ से जुड़ता नजर आता है। तमाम समस्याओं से ग्रस्त होने के बाद नगरों और महानगरों का मोह युवाओं में कम नहीं हुआ है। इसीलिए गोपाल शहर को एक सुविधा के रूप में देखता है। शहर उसके लिए पैसा बनाने की सुविधा का नाम है भी। किसी भी कीमत पर वह उस सुविधा के घेरे में शामिल होना चाहता है। इसके लिए उसे पिता की संवेदनात्मक अनुभूति बाधक जान पड़ती है। विदित है की पूंजी नींव ही संवेदना की शहादत पर पड़ती है। दरअसल, रामसिझावन और गोपाल के बीच जो अंतर है, वह एक संवेदनशील और एक असंवेदनशील व्यक्ति के अंतःकरण का अंतर है।

पिता और पुत्र के कुछ संवादों से दोनों के बे–मेल होने का वास्तविक उद्घाटन होता है। बतौर बानगी दो–एक संवाद इस प्रकार है– रामसिझावन– "ई प्याऊ ना ह रे, इ तो निशानी है हमार बेटवा के... तोहार बड़का भाई के। अउर तूं है की..."

गोपाल– "अरे जब था, तब था, अब क्या है सार में. पच्चीस बरस बीत गए उसे मरे–खपे, क्या उसी को छाती चिपकाए रहूंगा?"

रामसिझावन– "बेटा, ई प्याऊ न तोहर कमाई से बनी, न हमार कमाई से ई तो गोविंदा की मौत की कमाई से बनी. तू सोच ई पर कइसे हक जमा सकत हैं हम?"

गोपाल गरजता है– "धरम –करम मुझे नहीं चाहिए। यह सब सईसों के चोचले हैं. मुझे इससे कुछ नहीं लेना। मुझे बस दुकान के लिए प्याऊ चाहिए."

गोपाल प्रेमचंद की 'ईदगाह' का हामिद नहीं है जिसे अपनी दादी अमीना के लिए चिमटा खरीदने की फिक्र है ताकि रोटी सेंकते हुए उसकी दादी के हाथ न जलें. हामिद और गोपाल में लगभग सौ साल का अंतर है। और साल में बहुत कुछ बदल गया है। यह कहानी उसी बदले वाले आदमी को सामने लाती है। मन्नू जी की यह कहानी कैलाश बनवासी की कहानी 'बाजार में

PIF-7.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

रामधन' के समान है। जिस तरह बाजार की ताकत के सामने रामधन को एक दिन हारना पड़ता है और अपने प्यारे बैलों को उसके (बजार के) हवाले करना पड़ता है, उसी तरह एक मन्नू जी की इस कहानी का अंत प्याऊ के तोड़े जाने के दृढ़ संकल्प के साथ होता है। कहानी की सार्थकता इसी में है कि वह प्याऊ के तोड़े जाने के खिलाफ करुणा पैदा करती है। करुणा ही इस कहानी की ताकत है।

मन्नू जी की यह कहानी कई मायनों में महत्वपूर्ण है. मन्नू जी वरिष्ठतम कथाकार हैं। वह कई साल में स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से जूझ रही हैं। इतने के बाद भी वह देश में हो रही घटनाओं, खासकर किसान आंदोलन को लेकर न केवल सजग हैं, बल्कि रचनात्मक हस्तक्षेप भी करती हैं। इसलिए यह कहानी स्वयं में ऐतिहासिक दस्तावेज है। यह कहानी को मन्नू जी की ही एक दूसरी कहानी 'नमक' के साथ पढ़े जाने की मांग करती नजर आती है। यह कहानी हमें उस किरदार के पास ले जाती है, जिसके मस्तिष्क का निर्माण गांव व शहर के द्वंद्व से हुआ है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मन्नू भंडारी : "महाभोज" सन् 1979.
2. जगदीश चन्द्र : धरती धन न अपना।
3. मोहन नैमिशराय : अपने दृ अपने पिंजरे (भाग दृ एक 1995 ई० भाग– दो सन् 2000).
4. ओम प्रकाश बाल्मिकी : जूठन सन् 1997.
5. सूजन पाल चौहान : तिरस्कृत सन् 2002.
6. डॉ. तुलसी राम : मुर्दहिया सन् 2010.
7. राहुल सांकृत्यायन : वोल्गा से गंगा तक।
8. उग्रः फागुन के दिन चार।
9. रांगेय राघव : कब तक पुकारूं।
10. फणीश्वर नाथ "रेणु" : मैला आँचल, परती परिकथा, पल्टू बाबु रोड।
11. अमृतलाल नागर : सतरंज के मोहरे, अमृत और विष।
12. उदयशंकर भट्ट : लोक–परलोक।

*****